International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

आज के सामाजिक परिवेश में डिजिटल बाल साहित्य की अवधारणा

अर्चना तिवारी
शोधार्थिनी, राजकीय महिला महाविद्यालय, बदायूं, उत्तर प्रदेश
डॉ. वंदना
शोध पर्यवेक्षक एवं असिस्टेंट प्रोफेसर, हिदी हिभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, बदायूं, उत्तर प्रदेश

शोध सार- डिजिटल बाल साहित्य से आशय उस साहित्यिक सामग्री से है, जो बच्चों के लिए डिजिटल माध्यमों के द्वारा सृजित, प्रकाशित एवं प्रसारित की जाती है। इसमें ई-पुस्तकें, ऑनलाइन कहानियाँ, डिजिटल पत्रिकाएँ, शैक्षिक वेबसाइटें, मोबाइल एप्लिकेशन, श्रव्य-दृश्य कथाएँ, एनिमेटेड कहानियां तथा संवादात्मक कथानक सम्मिलित होते हैं। जो प्रबुद्ध जन के साथ-साथ बाल मन को भी आकर्षित करते है। यह शोध पत्र समाजिक परिवेश में डिजिटल बाल साहित्य की भूमिका का विश्लेषण करता है।इस अध्ययन का केन्द्र विन्दु डिजिटल बाल साहित्य है। आज के सामाजिक परिवेश मे डिजिटल साधनो ने तीव्र गति से बाल पाठक को अपनी तरफ आकर्षित किया है। आज कल बच्चे किताबो, पत्र -पत्रिकाओं के लिखित संस्करण को छोडकर उसके इलेक्ट्रानिक रूपांतरण की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। डिजिटल बाल साहित्य दृश्य-श्रव्य तत्वों से युक्त एक नवीन साहित्यिक अभिव्यक्ति है,जो वर्तमान समय में बच्चो की बदलती रुचियो और जिज्ञासाओं के अनुरूप विकसित हो रहा है। इस शोध पत्र का व्यापक उद्देश्य इस विन्दु का विश्लेषण करना है कि किस प्रकार डिजिटल बाल साहित्य बच्चों के समाजिक परिवेश, नैतिक एवं सामाजिक,सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करने में सक्रिय है या फिर केवल वाह्य रूप से उनका मनोरंजन करने में सहायक है। आज चका-चौध की रंगीन दुनियां में बच्चे किताबो को छोड़कर मोबाइल इन्टरनेट , ई. बुक, वेबसाइट और एप्स की तरफ आकर्षित हो रहे है । साहित्य केवल पाठ्य पुस्तको तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि चित्र, ध्वनि, श्रव्य-दृश्य साधनो आदि के माध्यम से बच्चों के भावात्मक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास में सहायक बना है। विभिन्न प्रकार के डिजिटल मंचों पर उपलब्ध कथाएँ बच्चो को विविध समाजिक अनुभवों, मूल्यों और सामाजिक समस्याओं से परिचित कराती है। यह शोध इस तथ्य का प्रतिपादन करता है कि डिजिटल बाल साहित्य आज के सामाजिक परिवेश में केवल मनोरंजन का साधन न रहकर व्यवहारिक रूप से आने वाली पीढ़ी में सामाजिक चेतना एवं मूल्यबोध के विकास का एक प्रभावशाली माध्यम है।

बीज शब्द - बलमन ,बाल साहित्य , डिजिटल युग , सोशल मीडिया, सूचना-संचार , मोबाइल इंटरनेट , डिजिटल तकनीकी ।

1. बाल **साहित्य में साहित्य और और समाज का अंतर्संबंध**

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य और समाज के पारस्परिक संबंधों पर विचार करते हुए कहा जा सकता है कि साहित्य अपने समय की सामाजिक

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

चेतना, वैचारिक पृष्ठभूमि तथा सांस्कृतिक प्रवृत्तियो को अभिव्यक्त करता है। साहित्य केवल विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर सामाजिक यर्थाथ को भी प्रस्तुत करता है। अर्थात हम कह सकते हैं कि साहित्य और समाज का संबंध पारस्परिक एवं अन्योन्याश्रित है। समाज साहित्य को जन्म देता है और साहित्य समाज को दिशा प्रदान करता हैं । साहित्य केवल वयस्क मन को ही नहीं अपितु बालमन को भी आकर्षित करता रहा है ।

साहित्य न केवल व्यस्कों के मनोरंजन, बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास में सहायक होता है, बल्कि बालक के मानसिक, नैतिक और सामाजिक विकास को भी समृद्ध करता है। यह दोनों ही पीढ़ियों को संवेदनशीलता, मूल्यबोध और चिंतनशीलता प्रदान करते हुए उनके व्यक्तित्व को संतुलित एवं समृद्ध बनाने में समर्थ है । साहित्य के माध्यम से अनुभव, आदर्श और जीवन-दृष्टि पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित होते रहते हैं, जिससे समाज का सतत् विकास निरंतर चलता रहता है। प्राचीन काल से ही बाल साहित्य की प्रासंगिकता रही है। प्राचीन संदर्भ में बालमन उपयोगी साहित्य मौखिक परंपरा, लोककथा तथा धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से प्रकाशित होती थी। परंतु आधुनिक समय में मुद्रित बाल पुस्तकों पत्र- पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को समृद्ध किया। बाल साहित्य के इस रूप ने बालमन के मनोरंजन, जिज्ञासा और भौतिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। परंतु हम जानते हैं कि परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है और समयानुसार साहित्यिक परिवेश में भी परिवर्तन हुआ और 21वीं शताब्दी में डिजिटल क्रांति ने बाल साहित्य के स्वरूप,संरचना तथा अभिव्यक्ति को अत्यधिक व्यापक रूप में प्रदर्शित किया।

बाल साहित्य के महत्व के संदर्भ में डॉक्टर विजय लक्ष्मी सिन्हा कहती है कि "बालक, देश का भावी कर्णधार है। आज के बालक कल का राष्ट्र निर्माता है। अपनी योग्यता के बल पर जब वह बुराइयों को दूर कर अपने समाज तथा देश में नई चेतना भरता है तब वही राष्ट्र विकसित होकर उन्नतशील देशों के समक्ष खड़ा होने योग्य हो जाता है। किन्तु आरम्भ में बालक का मस्तिष्क कोरी स्लेट की तरह होता है जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है। अतः उसके अनिश्चित एवं अनिर्धारित भविष्य की रूपरेखा देना हमारा काम है और यह कार्य साहित्य के माध्यम से किया जाता है। इसलिए बाल साहित्य की महत्ता अन्य साहित्य से अधिक बढ़ जाती है।"1"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बच्चों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य अन्य साहित्य से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सही मायने में वही सच्चा बाल साहित्य हो सकता है जो बालकों के मन में जिज्ञासा, उत्सुकता और कौतूहल जैसे संवेगों को बनाए रखें तथा जीवन में उपस्थित चुनौतियों से भली-भांति निपटने के लिए तैयार कर सके।

2. आज का सामाजिक परिवेश और बाल साहित्य

आज का सामाजिक परिवेश तकनीकी विस्तार, वैश्वीकरण, सूचनाओं की तीव्रता और सांस्कृतिक विस्तार की अंतःक्रिया से निर्मित है। बच्चों का जीवन अब डिजिटल माध्यमों से अत्यधिक व्यापक रूप में जुड़ चुका है। ऐसे में बाल साहित्य का स्वरूप भी परिवर्तित होकर डिजिटल बाल साहित्य के रूप में विकसित हुआ है, जो ई-पुस्तक, ऑडियो-वीडियो कथा, इंटरएक्टिव एप्स और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से बच्चों तक पहुँचता है।

निरंकार देव सेवक के अनुसार "बच्चों का मन अत्यंत चंचल होता है और वे किसी विषय पर अधिक समय तक अपने चित्त को एकाग्र नहीं रख पाते। उनमें कोतूहल और जिज्ञासा की प्रवृत्ति अत्यंत प्रबल होती है, जिसके कारण वे नई-नई वस्तुओं को देखने, समझने और उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं। रंग-बिरंगी, आकर्षक तथा लयात्मक वस्तुएँ उन्हें विशेष रूप से आकर्षित करती हैं और गद्य की अपेक्षा गीत उन्हें अधिक प्रिय लगते हैं। उचित शिक्षा और उपयुक्त साहित्य के माध्यम से उनकी रुचि को सकारात्मक दिशा में मोड़कर उन्हें एकाग्रचित्त बनाना संभव है।"**2**

निरंकार देव सेवक का यह कथन वर्तमान समय में डिजिटल बाल साहित्य के संदर्भ में अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि आज इंटरनेट, मोबाइल, ई-बुक, ऑडियो-विजुअल कहानियों और शैक्षिक ऐप्स के माध्यम से बच्चों के मानसिक और बौद्धिक विकास के अनेक नए साधन उपलब्ध हैं। डिजिटल माध्यमों में चित्रात्मकता और संगीतात्मकता का समन्वय होने के कारण यह बच्चों की जिज्ञासा और रुचि को अत्यधिक बढ़ाता है।

वर्तमान समय में बालक तकनीकी परिवेश में पल -बढ़ रहा है ,जिससे उसका तकनीकी संचार माध्यमों के प्रति रुझान बढ़ रहा है। यही कारण है कि अब बालक पुस्तकों ,पत्र-पत्रिकाओं के लिखित संस्करणों से ज्यादा श्रव्य-दृश्य संसाधनों से ज्यादा प्रभावित हो रहा है।आज के सामाजिक परिवेश में जहाँ डिजिटल माध्यम बच्चों के जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं, वहाँ डिजिटल बाल साहित्य की प्रासंगिकता अत्यंत बढ़ जाती है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने हमारे सामाजिक जीवन के साथ-साथ साहित्यिक दुनिया को बहुत ही अधिक प्रभावित किया। पहले के समय में साहित्य किताबों ,पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकालयों तथा समाचार पत्रों तक ही सीमित था, लेकिन अब डिजिटल माध्यमों के कारण यह अत्यधिक समृद्ध हो रहा है।

बाल साहित्य में डिजिटल साहित्य आधुनिक समय के परिवेश की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। डिजिटल माध्यमो ने बाल पाठको को अपनी तरफ विशेष रूप से आकर्षित किया। आज का बालक केवल पाठक या श्रोता न होकर एक परस्पर क्रिया करने वाले उपयोगकर्ता के रूप में प्रदर्शित हो रहा है। ऐसे में अगर डिजिटल बाल साहित्य बालमन में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के संवर्धन का माध्यम बनकर सामने आता हैं तो साहित्य और समाज की दृष्टि से अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

3. डिजिटल बाल साहित्य

डिजिटल बाल साहित्य से अभिप्राय उस साहित्यिक सामग्री से है जो बच्चो को डिजिटल माध्यमों से जैसे इन्टरनेट ,एनीमेशन ,ऑनलाइन, ई पत्रिकाओं , मोबाइल एप तथा आडियो-विडियो प्लेटफार्म के माध्यम से मिलती है ।इसमे बालक अपनी रोचक कहानियों, पत्र-पत्रिकाओं को श्रव्य-दृश्य माध्यमों से देखता-सुनता और उस पर अपनी प्रतिक्रिया भी करता है ।वर्तमान समय में डिजिटल तकनीकियों ने बाल साहित्य की संरचनात्मक एवं प्रस्तुतीकरण में उल्लेखनीय परिवर्तन किये। इंटरनेट, मोबाइल एप्स और डिजिटल पुस्तकों के माध्यम से बाल साहित्य का स्वरूप अधिक व्यापक और प्रभावीशाली हो गया है। पहले बालक पुस्तकों में केवल कहानियों को पढ़कर समझता

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

था, धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन हुए तो वह उन कहानियों को चित्रों के माध्यम से समझने लगा और आज वर्तमान समय में डिजिटल तकनीकी के माध्यम से वह उन कहानियों को आत्मसात कर रहा है।

"बाल साहित्य समाज की बदलती परिस्थितियों के साथ निरंतर नए रूप ग्रहण करता रहा है।"**2** प्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. सुरेंद्र विक्रम का यह विचार डिजिटल बाल साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करता है क्योंकि जिस तरह समाज और तकनीक में परिवर्तन होता है, वैसे-ही बाल साहित्य में भी विविध प्रकार के आयामों का समावेश हुआ है । डिजिटल बाल साहित्य उसी परिवर्तनशील प्रक्रिया का आधुनिक रूप है, जिसमें पारंपरिक बाल साहित्य की मूल्यपरक संवेदनाएं नई तकनीक जैसे इन्टरनेट ई-बुक,आडियो-बुक एनिमेशन आदि के माध्यम से बच्चों तक पहुँचाए जा रहे हैं।

20वीं सदी में जहां बाल साहित्य केवल लिखित रूप में प्रदर्शित हो रहा था वही **21**वीं सदी में यह ऑनलाइन ,ऑडियो-वीडियो बुक्स के रूप में दिखाई दे रहा है ।डिजिटल बाल साहित्य साहित्य को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त कर वैश्विक स्तर पर इसका संवर्धन कर रहा है। जहां बालक विविध भाषा-भाषी डिजिटल कहानियों को पढ़कर उन पर अपनी प्रतिक्रियाओं को प्रदर्शित करता है तथा उससे मिलने वाले राष्ट्रीय , सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को आत्मसात करता है। डिजिटल बाल साहित्य मुद्रित बाल साहित्य का केवल परिवर्तित रूप ही नहीं अपितु एक नई भावाभिव्यक्ति का माध्यम है। जिसमें श्रव्य-दृश्य साधनों के साथ-साथ पाठक की सहभागिता का भी समावेश होता है ।पारंपरिक रूप से भिन्न हटकर बालक डिजिटल तकनीकियों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं, ऑडियो-वीडियो क्लिपों को देखकर-सुनकर अपने श्रवण-वाचन कौशलों का विकास करता है। इसके साथ ही चित्रात्मक और संगीतात्मक साहित्य के माध्यम से प्राप्त अनुभव अविस्मरणीय होते हैं।

इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया और विविध प्रकार के ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों ने हिंदी लेखकों को भी अपनी रचनात्मकता को व्यापक रुप में पाठक-वर्ग तक पहुँचाने के नए साधन प्रदान किए हैं। फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे मंचों ने लेखक और पाठक के मध्य संवाद को प्रत्यक्ष और सक्रिय बनाया है। अतः इस अंतः क्रियात्मक संबंध ने साहित्य की भाषा-शैली, विषय-वस्तु और प्रस्तुतियों में भी परिवर्तन उत्पन्न किया है। इस प्रकार, डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य के स्वरूप, संरचना और संप्रेषण प्रणाली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप साहित्य अधिक सुलभ, बहुआयामी और संवादपरक बनकर उभरा है।

प्रख्यात बाल-गीतकार निरंकार देव सेवक के अनुसार "बाल साहित्य वह साहित्य है जिसमें बच्चों की रुचि, जिज्ञासा, इच्छा-आकांक्षा, राग-द्वेष, भावना और कल्पना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हो।"**3** लेखक निरंकार देव सेवक कि इस अवधारणा को डिजिटल माध्यम और अधिक व्यापक बना देता है क्योंकि इस माध्यम से बालक केवल पाठक नहीं रहता है बल्कि दृश्य-श्रव्य और इंटरैक्टिव माध्यमों के द्वारा साहित्य का अनुभव कर उसका सक्रिय सहभागी बन जाता है।

इसी प्रकार प्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. राष्ट्रबंधु का विचार है कि बाल साहित्य में रोचकता और प्रेरणा का होना अत्यंत आवश्यक है। अगर साहित्य रोचक नहीं होगा तो वह बालकों में जिज्ञासा और कौतुहल नहीं उत्पन्न कर सकेगा, न ही मूल्यपरक गुणों का विकास कर सकेगा और उसका शैक्षिक उद्देश्य भी अधूरा रह जाएगा। वर्तमान समय में डिजिटल बाल साहित्य इन दोनों तत्वों को सशक्त रूप से प्रस्तुत

करता है, क्योंकि इसमें चित्र, ध्वनि, एनीमेशन और इंटरैक्टिवता के माध्यम से रोचकता बढ़ती है तथा साहित्य के माध्यम से बालक में प्रेरणात्मक संदेश भी प्रभावी रुप से संप्रेषित होते हैं।**4**

4. डिजिटल बाल साहित्य समग्र मूल्य चेतना का संवर्धक

बाल साहित्य केवल पारम्परिक मूल्यों के प्रस्तुतीकरण का माध्यम होने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह बालको में सम्पूर्ण मूल्य चेतना को विकसित करने का एक प्रभावशाली माध्यम है। राष्ट्रीय एवं नैतिक मूल्यों की दृष्टि से डिजिटल बाल साहित्य विशेष महत्व रखता है। डिजिटल कथाओं में राष्ट्रप्रेम, विविधता में एकता, सामाजिक समरसता, सहिष्णुता, सहयोग, ईमानदारी और संवेदनशीलता जैसे मूल्यों को आधुनिक कथ्य और आकर्षक प्रस्तुति के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा रहा है। यहाँ मूल्य उपदेशात्मक रूप में नहीं, बल्कि अनुभवात्मक और सहभागितापूर्ण रूप में प्रस्तुत होते हैं। उदाहरणतः किसी डिजिटल कहानी में पर्यावरण-संरक्षण का संदेश केवल कथन के रूप में नहीं, बल्कि पात्रों की गतिविधियों, चित्रात्मक प्रस्तुति और अंत में सहभागिता-आधारित प्रश्नों के माध्यम से दिया जाता है। इसी प्रकार डिजिटल माध्यम के द्वारा बच्चे विभिन्न देशों की सभ्यता और संस्कृतियों से सुलभता से परिचित होते हैं । डिजिटल तकनीकियों के माध्यम से बालक सरलता पूर्वक किसी भी कहानी के मौलिक उद्देश्य और उससे मिलने वाले शिक्षाओं को समझता है और आत्मसात करता है तथा इसके साथ-साथ बालक में अंतर सांस्कृतियों की समझ भी विकसित होती है ।
जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार डिजिटल साहित्य बालमन के लिए जितना लाभदायक है उतना ही चुनौतीपूर्ण भी है। जहां एक तरफ बालक विज्ञान ,इतिहास ,पर्यावरण और समाजशास्त्र जैसी विभिन्न जानकारियों को आसानी से प्राप्त कर लेता है तो वहीं दूसरी तरफ बच्चों में पारंपरिक रूप से इन जानकारियों को प्राप्त करने के लिए पढ़ने वाली पुस्तकों के प्रति उदासीनता उत्पन्न हो रही है। डिजिटल साहित्य के माध्यम से बालमन का मनोरंजन हो रहा है और उनमें कल्पना शक्ति का विकास हो रहा है लेकिन इन्हीं मनोरंजनपूर्ण साधनों से बालक कभी-कभी उग्रवादी और विरोधी बनता हैं। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि बाल साहित्य में डिजिटल तकनीकियों का प्रयोग संतुलित, उद्देश्य पूर्ण और मूल्यपरक तरीके से किया जाए। जिससे इसका बालमन पर सकारात्मक प्रभाव पड़े ।

5. निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि डिजिटल युग में बाल साहित्य का स्वरूप अधिक व्यापक, प्रभावशाली और विविधतापूर्ण हो गया है। डिजिटल साहित्य के प्रयोग से बाल साहित्य का स्वरूप और आधुनिक तथा आकर्षक हो गया ।यह केवल ज्ञान और मनोरंजन का साधन ही नहीं, बल्कि बालक के सर्वांगिण विकास का सशक्त माध्यम बन गया है।

यदि डिजिटल बाल साहित्य का उपयोग संतुलित रुप से मूल्यपरक और उद्देश्यपूर्ण ढंग से किया जाए, तो यह बालकों के संपूर्ण कौशल और मूल्य विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अतः वर्तमान समय में डिजिटल बाल साहित्य को बाल शिक्षा

और समाज निर्माण की प्रक्रिया का एक अत्यंत आवश्यक एवं प्रभावशाली अंग माना जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. आधुनिक हिन्दी में बाल साहित्य का विकास, डॉ० विजय लक्ष्मी सिन्हा, प्रथम संस्करण **1986.** पृष्ठ संख्या–**11.** प्रकाशक साहित्यवाणी, **28,** पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद–**211006.**

2. निरंकार देव सेवक द्वितीय संस्करण **2013,** बाल साहित्य इतिहास एवं समीक्षा, सम्पादक प्रो० उषा यादव, पृष्ठ संख्या–**7.8.** प्रकाशक उत्तद प्रदेश हिन्दी संस्थान, **6-** महात्मागांधी मार्ग, लखनऊ–**226001**

3. डॉ० सुरेद्र विक्रम हिंदी बाल पत्रकारिता उद्भव और विकास पृ. **9**

4. श्री निरकार देव सेवक बाल गीत परंपरा विकास और संभावनाएँ लेखमाल साहित्य रचना हरिकृष्ण देवसरे पृ० **53**

5. डॉ राष्ट्रबंधु, मेरे प्रिय बालगीत पू. **6**

6. **Story Weaver –** बच्चों की डिजिटल कहानियों का ओपन प्लेटफॉर्म।

7. **National Digital Library of India –** भारत सरकार द्वारा संचालित डिजिटल लाइब्रेरी।

8. **Google Books –** ई–बुक और पुस्तक पूर्वावलोकन का डिजिटल मंच।

9. **Internet Archive –** ऑनलाइन डिजिटल पुस्त